**ओ३म्**

**‘पं. युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा आर्यों को कर्तव्योपदेश सहित चेतावनी’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 आर्यसमाज में बड़े-बड़े समारोह होते आयें हैं व अब भी होते हैं। इन समारोहों पर भारी धनराशि व्यय की जाती है। इनमें राजनेताओं को बुलाया जाता है जो अपनी बात कहकर चले जाते हैं। हमने भी विगत कई वर्षों में आर्यसमाज के कई समारोहों में राजनेताओं के मुख से अपने-अपने दल के हितों की बातों को कहते सुना है। ऐसे अवसरों पर आर्यनेताओं द्वारा बड़ी-बड़़ी घोषणायें की जाती है जो प्रायः सभी अव्यवहारिक होती हैं। शायद् ही की गई घोषणाओं में कभी कोई घोषणा पूरी होती हो। ऐसी बातों को ध्यान में रखकर ही आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान और ऋषिभक्त पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने अजमेर में सन् 1983 में मनाये गये ऋषि निर्माणोत्सव शताब्दी समारोह पर अपने उपयोगी चिचार वेदवाणी नामक प्रसिद्ध मासिक पत्रिका के **‘दयानन्द –विशेषांक’** में लिखे थे। आज भी उनके विचार प्रासंगिक हैं, अतः हम उन्हें उपयोगी समझकर प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस स्मरणीय **‘दयानन्द-बलिदान-शताब्दी’** के अवसर पर समस्त आर्य व्यक्तियों को आर्यसमाज के व्यतीत 100 वर्षों के कार्य पर शान्त-भावना और गम्भीरता से विचार करना चाहिये कि **क्व आस्ताः क्वः निपतिताः (महाभाष्य 1-2-9)** हम कहां थे और कहां गिर पड़े अर्थात् आरम्भ काल में आर्यसमाज की जो उदात्त ख्याति, आर्य व्यक्तयों का उदात्त जीवन और उन में जो कर्तव्य-परायणता थी, वह इस समय कहां लुप्त हो गई। ऐसा जिन कारणों से हुआ उन्हें हमें खोजना चाहिये। जब तक रोग का निदान (=कारण का ज्ञान) नहीं होता, तब तक उसका यथोचित उपचार नहीं हो सकता। आर्यसमाज के गिरावट के कारणों का यथार्थ ज्ञान होने पर ही हम उन कारणों को दूर करके ही अपनी उन्नत-स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं।

**आजकल के तथाकथित नेता, जो आर्यत्व से स्वयं रहित हैं और अपने जैसे ही चाटुकार लोगों से घिरे हुए हैं, वे अपनी और आर्यसमाज की वास्तविकता को छिपाने के लिये अथवा उस ओर से आर्य व्यक्तियों का ध्यान हटाने के लिये बड़े-बड़े तथाकथित समारोहों का आयोजन करते हैं।** ऋषि-भक्त आर्यजनता को इकट्ठा करके 3-4 दिन की तड़क भड़क पर लाखों रुपया फूंक देते हैं या फुंकवा देते हैं। आर्यसमाज की अवनति के कारणों और उनके दूर करने के उपायों पर तनिक भी ध्यान नहीं देते। जैसे पाकिस्तान के अधिकारी अपनी जनता का, उन की वास्तविक मागों से ध्यान हटाने के लिये समय-समय भारतवर्ष पर चढ़ाई करके अपना उल्लू सीधा करते हैं, वही दशा हमारे तथाकथित नेताओं की है।

ये लोग राजनीतिक लाभ के लिये अपने मान्य सिद्धान्तों को भी ताक में रख कर (आर्यसमाज-शताब्दी, 1975 देहली के अवसर पर **‘धर्म एक है’** इस मूल भूत सिद्धान्त को झुठला कर **‘विश्वधर्म-सम्मेलन’** का कार्यक्रम रखा गया। स्व. संजय गान्धी ने आकर अपने पंचसूत्री कार्यक्रम को अपनाने का उपदेश दिया।) राजनेताओं को बुलाते हैं। उनके चरण चुम्बन करते हैं। **‘गंगा गये गंगादास यमुना गये यमुनादास’** के चेहरे वाले राजनेता दो चार शब्द ऋषि दयानन्द और्र आसमाज की स्तुति के कहकर अपने प्रोग्राम पर चलने का हमें उपदेश देकर चले जाते हैं।

इस बार बलिदान-शताब्दी, जिसे वर्तमान नेताओं ने निर्वाण-शताब्दी नाम दिया है, ऐसा ही ढोंग रच रहे हैं। इन्होंने प्रधानमन्त्री इन्दिरा जी और राष्ट्रपति जी आदि को निमन्त्रण दिया है। ये लोग आयेंगे और अपना उपदेश झाड़कर चले जायेंगे। इस बार भी ये नेतागण लाखों रुपये आर्यजनता के व्यय कर वा करवा कर 4 दिन की तड़क भड़क दिखा कर आर्यसमाज की उन्नति का कोई ठोस कार्यक्रम नहीं बनायेंगे।

समाचार पत्रों में **‘आर्यसमाज-शताब्दी’** के अवसर पर अनेक उपयोगी कार्यक्रमों की घोषणा की गई थी, जो घोषणामात्र बनकर रह गई। इस बार भी बड़ी भव्य योजनाओं की घोषणा हो रही है। जैसे **‘शोध योग्य पुस्तकालय’** और **‘वैदिक-शोध-संसान’** की स्थापना आदि-आदि परन्तु जो परोपकारिणी सभा आज तक अपने छोटे से पुस्तकालय को भी वह रूप न दे सकी, जिस से किसी व्यक्ति को अभिलषित पुस्तक समय पर उपलब्ध हो सके, उस से किसी महान् शोध-कार्योपयोगी पुस्तकालय का निर्माण और व्यवस्था करने की आशा रखना दुराशा-मात्र है। रही **‘‘वैदिक शोध-संस्थान”** की स्थापना की बात, यह तो उससे भी कठिन कार्य है। इस कार्य के लिये उपयुक्त व्यक्तियों का मिलना ही दुर्लभ है। जिस व्यक्ति ने ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का कई बार पारायण, प्राचीन वैदिक वांग्मय का गहरा अनुशीलन और पाश्चात्य विद्वानों के आक्षेपों का अध्ययन न किया हो, वह ऐसे महत्वपूर्ण कार्य को नहीं कर सकता। हां, एम.ए. पी.एच.डी. व्याकरणाचार्य आदि उपाधिधारी तो बहुत मिल जायेंगे। फिर भी हम मन से चाहते हैं कि परोपकारिणी सभा इस कार्य को करने का उत्तरदायित्व निभाये। यदि यह ऐसा करेगी, तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। ईश्वर करे परोपकारिणी सभा इस में सफल होवे।

ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों पर आक्षेप होते रहें, मान्य सभाओं को कोई इसकी परवाह नहीं, उस के पास ऐसे कार्य के लिये धन नहीं, किसी ब्राह्मण को वेदाध्ययन के लिये सहायता देने के लिये कोई निधि नहीं (देखें टिप्पणी1), उत्कृष्ट साहित्य लेखकों को सहायता वा सम्मान करने के लिये पैसा नहीं और सब खर्चों के लिए पैसें हैं।

आर्यजनता को चाहिये कि इन नपुंसक (देखें टिप्पणी 2) तथाकथित नेताओं की अधीनता त्याग कर अपने बल-बूते पर अपने पूर्वजों के समान वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लये तैयार होवें। उसके लिये प्रत्येक व्यक्ति को पहले स्वयं आर्य बनना होगा, स्वाध्याय करना होगा, आात्मोत्सर्ग के लिए प्रतिक्षण तैयार रहना होगा, तभी हम अपने आसपास के व्यक्तियों को अपने आचरण द्वारा आर्य बना सकेंगे और वेद का प्रचार कर सकेंगे।

**उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत**

आर्यों ! उठो जागो श्रेष्ठ गुणों को धारण करके स्वयं ज्ञानी बनकर पाखण्ड वा अज्ञान का नाश करके संसार को आर्य बनाने का संकल्प धारण करो, दयानन्द के दिव्य स्वप्न को पूरा करने के लिये कटिबद्ध हो जाओे। सफलता हमारा स्वयं वरण करेगी। इसके लिए वर्तमान तथाकथित नेताओं का मुख मत देखो। ये न स्वयं कुछ करेंगे और न किसी को आगे आने देंगे।

**इह चेद वेदीदथ सत्यमास्तिनोचेदिहावेदीन्महती विनष्टि**--**यदि इस समय हमने अपना कर्तव्य पहचान लिया, उसे पूरा करने के लिये कटिबद्ध हो गये तो ठीक है और इस समय कर्तव्य न पहचाना तो हमारा महानाश होगा।**

यहां विद्वान लेखक पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी का लेख समाप्त होता है। अब लेख में आये दो स्थलों से सम्बन्धित पाद टिप्पणियां प्रस्तुत हैं।

**टिप्पणी-1:** श्री पं. प्रियरत्न जी आर्ष संन्यास-धारण करने (ब्रह्ममुनि बनने) के पश्चात् जब अपने ज्येष्ठ गुरु भाई श्री पं. ब्रह्मदत्त से मिलने लाहौर आये थे, तब संन्यास लेने का प्रयोजन पूछने पर उन्होंने कहा था--मैंने बिना कुछ लिये सार्वदेशिक सभा को दो दर्जन से अधिक पुस्तकें लिख कर दी हैं, परन्तु जब मैंने सभा से 3 वर्ष के लिये गुरुकुल कांगड़ी में बैठकर वेद के स्वाध्याय के लिये 25 रुपये मासिक की सहायता मांगी तो सभा के मन्त्री जी ने उत्तर दिया--**‘हमारे पास कोई ऐसी निधि नहीं है, जिससे आपको सहायता दी जा सके’।** **सफेद कपड़े वाले को कोई धन देता नहीं, अतः कपड़े रंग लिये हैं। (यह वार्तालाप मैंने स्वयं सुना है। मैं वहीं बैठा था। -पं. युधिष्ठिर मीमांसक)** (हमने भी धनाभाव के कारण आर्यसमाज में अनेक प्रमुख कार्यों में उत्पन्न रुकावटों के बारे में सुना व पढ़ा है। -मनमोहन)

**टिप्पणी-2:** आर्यसमाज शताब्दी समारोह देहली क प्रबन्धकों ने अभ्यागतों के ठहरने के लिये आर्यसमाज के स्कूल कालिजों में व्यवस्था की थी, परन्तु **एक दिन पहले सरकार ने नोटिस जारी कर दिया--‘जिस स्कूल कालिज में बाहर से आये लोंगों को ठहराया जायेगा उस की ग्रांट बन्दर कर दी जायेगी।’** बस सारा प्रबन्ध चौपट हो गया। कड़ाके की सरदी में बाहर से आये लोगों पर जो बीती उसे वे ही जानते हैं। (हम तब दिसम्बर, 1975 के अन्तिम दिनों में ठण्ड के मौसम में अपने मित्र स्व. श्री धर्मपाल जी के साथ रामलीला मैदान में टैण्ट में ही सोये थे।) इस समय यदि स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसा नरपुंगव नेता होता तो समस्त आर्यजनता का नेतृत्व करके श्रीमती इन्दिरा जी की नींद हराम कर देता और ग्रांट बन्द के नोटिस को वापस लिवा कर छोड़ता। इस के लिये आर्यसमाज को चाहे कितना ही बलिदान क्यों न देना पड़ता।

हम आशा करते हैं कि पाठक इस लेख में पं. युधिष्ष्ठिर मीमांसक जी की पीड़ा को अनुभव करेंगे। आज भी स्थिति पूर्ववत् ही है। देश की वर्तमान स्थिति को देखकर कह नहीं सकते कि आर्यसमाज का भविष्य कैसा होगा?

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**एक अन्य लेख**

**ओ३म्**

**‘आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट का पुराना अप्राप्य ग्रन्थ ‘प्रमाण सूची’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली ने अपने स्थापना काल से लम्बी अवधि तक अनुसंधानपूर्ण अति उपयोगी आर्य साहित्य का प्रकाशन किया है जिनमें से एक ग्रन्थ **‘‘प्रमाण सूची”** है। यह ग्रन्थ बहुत पहले अप्राप्य हो चुका है। सन् 1975 में आर्यसमाज की स्थापना शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित पं. गोपाल राव हरि रचित **‘दयानन्द दिग्विजययार्क’** ग्रन्थ के अन्तिम कवर पृष्ठ पर विज्ञापन में इसका उल्लेख मिलता है जो महत्वपूर्ण होने से यथावत् प्रस्तुत हैः

**प्रमाण सूची**

महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश से लेकर वेदभाष्य-पर्यन्त तथा समस्त जीवन-चरितों, पत्र व्यवहार, उपदेश और शास्त्रार्थों से उद्धृत ग्रन्थों के क्रम से तथा मतवादियों के ग्रन्थों के अप्रमाण वचनों की पृथक्-पृथक् ग्रन्थ के नाम उल्लेखपूर्वक प्रकरणादि क्रम से बड़े पुरुषार्थ से यह सूची तैयार की गई है। इसकी सहायता से स्वाध्यायशील आर्य विद्वान किसी प्रामाणिक तथा अप्रामाणिक वचन का व्याख्यान बड़ी सरलता से प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य: सजिल्द छः रुपये।

**लेखक: धर्मपाल व्याकरणाचार्य।**

**-आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट**

यह ग्रन्थ हमारे संग्रह में उपलब्ध नहीं है। ४१ वर्ष पूर्व सन् 1975 में हमें इस ग्रन्थ की महत्ता का ज्ञान नहीं था। अब इसे जानकर इसकी प्राप्ति की इच्छा हुई है। यदि किसी बन्धु के पास इसकी पीडीएफ प्रति उपलब्ध हो या इसकी उपलब्धि स्थान का ज्ञान हो तो कृपया हमें सूचति करने की कृपा करें। हमें नहीं लगता कि अब ट्रस्ट व कोई प्रकाशक इसका निकट भविष्य में प्रकाशन करेगा। यदि इसकी पीडीएफ न बनी हो तो आर्य साहित्य के संरक्षण में कार्यरत संस्थाओं से विनती है कि वह इस ग्रन्थ की पीडीएफ बना कर इसे पाठको को उपलब्ध कराने की कृपा करें।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**